(१६) देवों और मानवों में...

देवों और मानवों में चर्चा ये चल पड़ी,
कौन पालकी का हकदार रे... कौन पालकी का हकदार है ॥ टेक ॥

दिव्य शक्ति के धारी हम हैं, पालकी लेकर आये हम हैं;
सदा निरोगी यौवनमय तन, गगन विहारी यह वैक्रियतन।
पहले हाथ लगायेंगे, पालकी के हम हकदार रे ॥ 1 ॥

यह तन तो जड़ पुद्गल का है, इसमें भी क्षण-भङ्गुरता है;
दिव्य-शक्तियाँ भी पुद्गल की इनमें शक्ति नहीं आतम की;
करो न अब तकरार रे... पालकी के हम हकदार रे॥ 2॥

वस्त्राभूषण हम ले आये, पन्द्रहमास रतन बरसाये;
पञ्च कल्याणक महामहोत्सव, भूतल पर आ हमीं मनाये;
न्याय से करो विचार रे, पालकी के हम हकदार रे॥ 3॥

जड़ रत्नों की क्या है महिमा, यह तो तीर्थङ्कर की गरिमा;
पुण्य उदय से ही तुम आओ, क्यों न अन्य का उत्सव मनायो;
मन में करो विचार रे, पालकी के हम हकदार रे॥ 4॥

समवशरण भी हम ही बनायें, दिव्यध्वनि का योग बनायें;
मोक्ष कल्याणक में भी आयें, पहले पालकी क्यों न उठायें;
क्यों नहीं करो विचार रे, पालकी के हम हकदार रे॥ 5॥

भव्यजीव के पुण्य उदय से, तीर्थङ्कर का वचन योग है;
क्या तीर्थङ्कर सम हो सकते, क्या संयम धारण कर सकते।
अतः नहीं हकदार रे... पालकी के हम हकदार रे॥ 6॥

धन्य-धन्य यह मानव जीवन संयम धारण कर सकते नर;
हे मानव सुर वैभव ले लो क्षणभर को मानव तन दे दो।
तुम सच्चे हकदार हो... पालकी के तुम हकदार हो॥ 7॥